9

यीशु की कलीसिया: आराधना (1)

यदि संगठन शरीर है, तो आराधना हृदय है। ''तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर'' (मत्ती 4:10ख)।

आराधना के दो महत्वपूर्ण पहलू ये हैं कि *क्या* किया गया है और *कैसे* किया गया है। यीशु ने सामरी औरत को बताया, ''...सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधना करने वालों को ढूंढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से उसकी आराधना करें'' (यूहन्ना 4:23, 24; ROV)। परमेश्वर की आराधना ''आत्मा से'' करने का अर्थ है, मन से आराधना करना। सच्चे आराधक जो कर रहे होते हैं उसके विषय में विचार करते हैं; वे अपने भावों को स्वर्ग की ओर निर्देशित करते हैं। ''सच्चाई से'' परमेश्वर की आराधना करने का भाव उसी प्रकार से आराधना करना है जैसे उसने अपने वचन में निर्देश दिया है, क्योंकि यीशु ने कहा था कि परमेश्वर का ''वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)।

इस और अगले पाठ में, हम देखेंगे कि यीशु की कलीसिया में आराधना के विषय में परमेश्वर का वचन क्या सिखाता है। ऐसा करते समय हम आराधना के ''क्या'' और ''कैसे'' दोनों पर ज़ोर देंगे। परमेश्वर की आराधना में सही कार्य और सही व्यवहार दोनों ही आवश्यक हैं।

आराधना का विशेष दिन

हम परमेश्वर की आराधना सप्ताह के किसी भी दिन कर सकते हैं। कलीसिया की स्थापना के आरम्भ में मसीही लोग हर रोज़ मिलते थे (प्रेरितों 2:46)। फिर भी, नया नियम सिखाता है कि सप्ताह का एक विशेष दिन है, जिसमें सभी मसीहियों को लिए आराधना के लिए इकट्ठे होना आवश्यक है।

पुराने नियम में, आराधना का विशेष दिन सब्त का दिन था, जो कि सप्ताह का सातवां दिन था (निर्गमन 20:10, 11)-अर्थात, शनिवार। मसीहियत में, सप्ताह का विशेष दिन-सप्ताह का पहला दिन अर्थात रविवार है। यह वह दिन था जिसमें मसीह मृतकों में से जी उठा था (मत्ती 28:1, 6)। यह वह दिन था जिस दिन मसीही लोग इकट्ठे होकर

(1 कुरिन्थियों 16:2), प्रभु-भोज में भाग लेते थे (प्रेरितों 20:7)। रविवार को ''प्रभु का दिन'' (प्रकाशितवाक्य 1:10) कहा गया है।[1]

हम आराधना की पांच अभिव्यक्तियों का अध्ययन करेंगे। इन में से तीन किसी भी दिन की जा सकती हैं: बाइबल अध्ययन, प्रार्थना, और गीत गाना। शेष दो, जिनका सम्बन्ध सप्ताह के पहले दिन से है: वे हैं प्रभ-भोज और चन्दा देना।

आराधना की अभिव्यक्तियां

प्रभु-भोज

आराधना की पहली अभिव्यक्ति जिस पर हम विचार करना चाहते हैं, वह है प्रभु-भोज। अपने चेलों के साथ अन्तिम फसह[2] के पर्व के समय, यीशु ने प्रभु-भोज की स्थापना की।

> ... प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया, रोटी ली और धन्यवाद करके उसे तोड़ा, और कहा; कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए है: मेरे स्मरण के लिए यही किया करो। इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और कहा; यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिए यही किया करो। क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो। इसलिए जो कोई अनुचित रीति से[3] प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लोहू का अपराधी ठहरेगा। इसलिए मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए (1 कुरिन्थियों 11:23-28)।[4]

प्रभु-भोज की स्थापना करते हुए यीशु ने अखमीरी रोटी[5] और दाख का रस[6] उपयोग किया। भोज के इस प्रथम समारोह में भाग लेने वालों ने रोटी और दाख रस दोनों में से ही लिया।[7]

जब यीशु ने कहा, ''यह मेरी देह है,'' तो उसका यह अर्थ नहीं था कि रोटी रहस्यमय और जादुई ढंग से उसके मांस में परिवर्तित हो गई थी। वह उनके सामने खड़ा था, उसका मांस वैसे का वैसा ही था। उसका अर्थ वही था जो मेरा होगा जब मैं दीवार से एक तस्वीर उतारकर कहूं, ''ये मेरे नाती-पोते हैं।'' तस्वीर मेरे नाती-पोतों का प्रतिनिधित्व करती है। इसी प्रकार, अखमीरी रोटी मसीह की देह का प्रतिनिधित्व करती है, और दाख का रस उस के लोहू का प्रतिनिधि है।

प्रभु-भोज को कई बार ''सहभागिता'' (1 कुरिन्थियों 10:16) या ''प्रभु की मेज़'' (1 कुरिन्थियों 10:21) कहा जाता है। क्योंकि इसका आरम्भ आराधना करने वाले द्वारा अखमीरी रोटी तोड़ने के साथ होता है, इसलिए आराधना की इस अभिव्यक्ति को ''रोटी तोड़ने'' के रूप में भी जाना जाता है:[8] आरम्भिक मसीही ''... रोटी तोड़ने

में ... लौलीन रहे'' (प्रेरितों 2:42)।

नये नियम की कलीसिया हर सप्ताह के पहले दिन प्रभु-भोज में भाग लेती थी। कलीसिया हर पहले दिन इकट्ठी होती थी (देखिए 1 कुरिन्थियों 16:1, 2)। उनकी आराधना प्रभु-भोज को मनाने के इर्द-गिर्द ही घूमती थी। प्रेरितों 20 में हम पढ़ते हैं कि पौलुस, लूका, और अन्य त्रोआस में पहुंचे। लूका ने बाद में लिखा, ''सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए, तो पौलुस ... बातें करता रहा'' (प्रेरितों 20:7)। जब त्रोआस में सप्ताह के पहले दिन मण्डली इकट्ठी हुई, तो उसका प्रमुख उद्देश्य रोटी तोड़ना था। आरम्भिक सदियों की कलीसिया में मसीहियों के लेख संकेत देते हैं कि उन्होंने यह रीति कई वर्षों तक जारी रखी: सप्ताह के हर पहले दिन मसीहियों के इकट्ठे होने पर उनका प्रमुख आकर्षण प्रभु-भोज होता था।

प्रभु-भोज लेने में परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए, सही चीज़ें करना आवश्यक है: मसीहियों को अखमीरी रोटी और दाख का रस दोनों में ही भाग लेना चाहिए। और उन्हें यह हर सप्ताह के पहले दिन करना चाहिए। इसे सही ढंग से लेना भी आवश्यक है: आराधकों को अपना ध्यान यीशु के बलिदान पर केन्द्रित करना चाहिए और यह कि उस बलिदान का उनके लिए क्या अर्थ है। (1 कुरिन्थियों 11:26-29 फिर से पढ़िये)।

परमेश्वर का वचन

जब त्रोआस में कलीसिया प्रभु-भोज में भाग लेने के लिए इकट्ठी हुई, तो पौलुस ने उनके साथ परमेश्वर की इच्छा की बात की (प्रेरितों 20:7)।[9] किसी व्यक्ति को परमेश्वर के निकट लाने के लिए परमेश्वर के वचन का प्रचार अथवा शिक्षा एक महत्वपूर्ण ढंग है। आरम्भिक कलीसिया वचन को पढ़े जाने अथवा चर्चा किए जाने वाले वचन को सुनने के लिए अक्सर इकट्ठी होती थी (प्रेरितों 2:42; कुलुस्सियों 4:16)।

सार्वजनिक आराधना सभा के समय प्रचार पर बाइबल कुछ पाबन्दियां लगाती है। परमेश्वर के वचन का प्रचार किया जाना चाहिए, न कि मनुष्यों के विचारों या कथा-कहानियों का (2 तीमुथियुस 4:1-4)।[10] सार्वजनिक सभाओं में प्रचार अथवा शिक्षा केवल पुरुष ही दें (1 कुरिन्थियों 14:34)।[11]

तथापि, वचन के अनुसार प्रचार और शिक्षा के ''क्या'' का पालन करना ही काफ़ी नहीं है। अर्थात एक प्रचारक परमेश्वर को भाने वाला प्रवचन देता है, इस बात की गारन्टी नहीं है कि प्रत्येक सुनने वाला आराधना कर रहा है। आराधना सुनने वाले के मन से होनी चाहिए। उपस्थित लोगों में से प्रत्येक के लिए ध्यान से सुनना और उसे अपने जीवन में लागू करने के लिए आराधना में भाग लेना आवश्यक है।

प्रार्थना

आराधना का एक महत्वपूर्ण भाग है प्रार्थना। पौलुस ने थिस्सलुनीके के मसीहियों को बताया कि ''निरन्तर प्रार्थना में लगे रहो'' (1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। किसी ने कहा है कि

जब हम बाइबल पढ़ते हैं, तो परमेश्वर हमारे साथ बात कर रहा होता है, और जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हम परमेश्वर से बात कर रहे होते हैं। नये नियम में, जब मसीही लोग इकट्ठे होते थे, तो वे प्रार्थना करते थे (प्रेरितों 2:42; 4:23, 24; 6:6; 12:12)।

प्रार्थना सार्वजनिक और व्यक्तिगत आराधना दोनों का ही महत्वपूर्ण भाग है। हर एक मसीही को प्रार्थना के जीवन में लगातार बढ़ते रहना चाहिए (मत्ती 6:5–15; 14:23; लूका 5:16; प्रेरितों 10:9; 16:25)।

सार्वजनिक आराधना में सामान्यत: मण्डली के पुरुष कई प्रार्थनाओं में अगुआई करते हैं। पौलुस ने लिखा, ''सो मैं चाहता हूं, कि हर जगह पुरुष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें'' (1 तीमुथियुस 2:8)। यहां पर प्रयोग किया गया शब्द ''पुरुष'' एक विशेष शब्द है जिसका अर्थ ''स्त्रियों'' के बजाय ''पुरुष'' है। सार्वजनिक आराधना सभाओं में प्रार्थना में अगुआई केवल पुरुष ही करें।

पुन, सार्वजनिक प्रार्थना के ''क्या'' को वास्तविक आराधना के बिना देखा जा सकता है। प्रार्थना करवाने वाला अगुआ परमेश्वर की उपस्थिति और अपने विचारों को मनुष्यों के बजाय परमेश्वर के पास निर्देशित करने के प्रति जागरूक होना चाहिए। जिनकी अगुआई प्रार्थना में हो रही है, उन्हें चाहिए कि वे अपने मनों में प्रार्थना करें और अपनी बिनतियां और धन्यवाद उसके साथ मिला लें। फिर वे कह सकते हैं ''आमीन'' (ऊंचे स्वर में अथवा अपने मन में), और वह गम्भीरता से और समझ के साथ होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:16; मत्ती 6:13 भी देखिए; रोमियों 16:27; इफिसियों 3:21)।[12]

चन्दा

परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करने का एक ढंग हर सप्ताह के पहले दिन अपना योगदान[13] देना है। पौलुस ने कुरिन्थुस में कलीसिया को बताया :

> अब उस चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिए किया जाता है, जैसी आज्ञा मैंने गलतिया की कलीसियाओं को दी, वैसा ही तुम भी करो। सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार[14] कुछ अपने पास रख छोड़ा करे,[15] कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)।

पुराने नियम में आराधकों के लिए चन्दे का एक विशेष प्रतिशत तय था: जितना आराधक के पास होता था, उसका 10 प्रतिशत। इसे ''दशमांश'' कहा जाता था (लैव्यव्यवस्था 27:30; व्यवस्थाविवरण 14:22; मलाकी 3:8–10)। नया नियम मसीहियों के लिए चन्दा देने के लिए कोई निश्चित प्रतिशत नहीं ठहराता। बल्कि, यह सिखाता है कि वे स्वेच्छा से, उदारता से, और हर्ष से (2 कुरिन्थियों 9:6, 7), ''अपनी आमदनी के अनुसार'' दें (1 कुरिन्थियों 16:2)। मैं ऐसे मसीहियों को जानता हूं जो अपनी आमदनी का 10 प्रतिशत या उससे अधिक देते हैं, परन्तु ऐसा वे दबाव से नहीं, बल्कि कृतज्ञता से करते हैं।

हो सकता है कि ''आमदनी के अनुसार'' देकर भी कोई आराधना न करे। आराधक

को चाहिए कि वह परमेश्वर का उसकी आशिषों के लिए धन्यवाद करते हुए और अपने दान को परमेश्वर के सामने स्वीकार करने की प्रार्थना भी ऊपर भेजे।

गीत गाना

आराधना की पांचवीं अभिव्यक्ति है गाना। पौलुस ने कुलुस्से में कलीसिया को आज्ञा दी, ''मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान तथा आत्मिक गीत गाओ'' (कुलुस्सियों 3:16)। गाने की अपनी चर्चा को हम अगले पाठ तक यहीं छोड़ते हैं, परन्तु, आयत में आराधना के ''क्या'' पर ज़ोर दिया गया है; ''एक दूसरे को सिखाओ, और चिताओ ... और परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।'' ''अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ'' आराधना के ''कैसे'' पर भी ज़ोर देता है।

आराधना का महत्व

हमने सार्वजनिक आराधना पर ज़ोर देते हुए, नये नियम में आराधना की शिक्षा के सम्बन्ध में चर्चा की है। अब हमें पूछना चाहिए, ''क्या इससे कुछ फ़र्क पड़ता है कि हम आराधना के लिए इकट्ठे हों या न हों?'' बहुत से लोगों का विचार है कि आराधना सभाओं में लगातार भाग लेना अनावश्यक है। बाइबल क्या सिखाती है? कइयों को यह जानकर आश्चर्य होता है कि परमेश्वर ने इस विषय पर भी बात की है।

इब्रानियों की पुस्तक उन मसीहियों के लिए लिखी गई थी जो कभी विश्वासी थे (इब्रानियों 10:32-34)। लेकिन किसी कारणवश, वे उदासीन और निश्चिन्त हो गए थे (इब्रानियों 2:3)। कलीसिया की सार्वजनिक सभाओं में उनकी उपस्थिति भी शामिल थी (इब्रानियों 10:25)। उन्हें ''प्रेम, और भले कामों में उकसाने के लिए एक दूसरे की चिन्ता'' (इब्रानियों 10:24) करने को कहा गया था। एक ढंग, जिस से ऐसा किया जा सकता था, वह था उनके इकट्ठा होने पर एक दूसरे को उत्साहित करना। इस कारण हम पढ़ते हैं: ''*एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है,* पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों-त्यों और भी अधिक यह किया करो'' (इब्रानियों 10:25)। आज लोगों के लिए, ''उस दिन को निकट आते'' का अर्थ यीशु का द्वितीय आगमन है।[16] मसीह किसी भी समय आ सकता है, सो हमें हमेशा तैयार रहना चाहिए (मत्ती 25:13)।

जो लोग आराधना में उपस्थित होने में लापरवाह होते हैं, वे आम तौर पर अपने मसीही जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी लापरवाह हो जाते हैं। इब्रानियों 10:26-31 इसके विरुद्ध चेतावनी देता है:

> क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप

करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हां, दण्ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा। जबकि मूसा की व्यवस्था को न मानने वाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है। तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिस ने परमेश्वर के पुत्र को पांवों से रौंदा, और वाचा के लोहू को जिस के द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह की आत्मा का अपमान किया। क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिस ने कहा, कि पलटा लेना मेरा काम है, मैं ही बदला दूंगा: और फिर यह, कि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा। जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है।

हमने वचन में पढ़ा है कि मसीहियों को हर सप्ताह के पहले दिन प्रभु-भोज में भाग लेना चाहिए। बहुत सी मण्डलियां सुधार और संगति के उद्देश्य से सप्ताह के अन्य दिनों में भी लगातार सभाएं करती रहती हैं। जिसने मसीह को अपना जीवन दे दिया है, वह इनमें जहां भी भाग ले सके, लेगा। इससे उसका मसीही विकास तेज़ होगा और उसे उन बातों पर ध्यान लगाने में सहायता मिलेगी जो वास्तव में आवश्यक हैं।

सारांश

किसी धार्मिक समूह को जांचने के लिए आपने आराधना के विषय में नये नियम की शिक्षा से काफी कुछ सीख लिया है। उदाहरण के लिए, आप पूछ सकते हैं, ''क्या यह संगठन हर सप्ताह के पहले दिन प्रभु-भोज में भाग लेता है?''; ''क्या इसके प्रचारक परमेश्वर के वचन का सच्चाई से प्रचार करने वाले हैं?''; ''क्या आराधना में केवल पुरुष ही अगुआई करते हैं?''

जांच करते हुए अपने हृदय की व्यक्तिगत जांच को नज़रअंदाज़ कर उपेक्षा मत कीजिए। अपने आप से पूछिए, ''क्या मैं मसीहियों के साथ परमेश्वर की आराधना करने का आनन्द लेता हूं?''; ''आराधना सभा में आते हुए, क्या मैं आराधना के लिए तैयार होता हूं?''; ''वहां होने पर क्या मैं सचमुच आराधना करता हूं?''[17] ये सभी प्रश्न महत्वपूर्ण हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]आरम्भिक अप्रेरित मसीही लेखकों ने पुष्टि की कि यूहन्ना वाक्यांश ''प्रभु के दिन'' प्रयोग करते हुए सप्ताह के पहले दिन की बात कर रहा था। [2]यहूदियों का ''फसह'' नामक एक त्यौहार था, जो परमेश्वर के द्वारा उनके घरों को ''छोड़ देने'' का स्मरण दिलाता था जब उसने मिस्रियों पर विपत्ति भेजी थी (देखिए निर्गमन 12)। [3]व्यक्तिगत योग्यता पर नहीं (कोई भी इतना योग्य नहीं है कि इसमें भाग ले सके), बल्कि बल उस *रीति* पर है जिसमें भाग लिया जाता है। ''अनुचित रीति'' से भाग लेना संकेत देता है कि, भाग लेते समय, वह मसीह यीशु के बलिदान के बारे में नहीं सोच रहा होता और उसका मन उसकी सराहना से भरा नहीं होता। [4]मत्ती 26:26-29; मरकुस 14:22-25; लूका 22:19, 20 भी देखिए। [5]फसह के भोज में केवल अखमीरी रोटी का ही उपयोग होता था (देखिए निर्गमन 12:15)। [6]देखिए मत्ती 26:29; मरकुस 14:25; लूका 22:18. आज,

वाक्यांश ''दाख रस'' विभिन्न रसों को कहा जा सकता है, परन्तु उस समय और स्थान में, इसका अर्थ अंगूरों का रस ही था। [7]कुछ धार्मिक संगठनों में, केवल चुने हुए कुछ लोग ही रस में भाग लेते हैं, जबकि शेष केवल रोटी लेते हैं। यह नये नियम के नमूने का उल्लंघन है। [8]नये नियम में, वाक्यांश ''रोटी तोड़ना'' साधारण भोजन के लिए भी हो सकता है। संदर्भ तय करता है कि इसका अर्थ साधारण भोजन है अथवा प्रभु भोज। [9]हमें पूरी तरह से नहीं मालूम कि पौलुस ने उन्हें क्या कहा, परन्तु हमें इतना मालूम है कि परमेश्वर का वचन सदा उनके मुंह में था। एक उदाहरण के लिए कि उसने उसी यात्रा में दूसरे मसीहियों को क्या बताया, देखिए प्रेरितों 20:31, 32. [10]यह कहने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए कि पहले प्रचारक विश्वास करे कि बाइबल परमेश्वर की ओर से है। दुर्भाग्यवश कुछ सांप्रदायिक कलीसियाओं के पुलपिट उन लोगों से भरे पड़े हैं जो बाइबल को परमेश्वर की प्रेरणा से दिया हुआ *नहीं* मानते।

[11]1 तीमुथियुस 2:8, 11, 12 भी देखिए। नया नियम विशेष परिस्थितियों में स्त्रियों को प्रचार करने की अनुमति देता है (प्रेरितों 18:26), परन्तु जब कलीसिया आराधना के लिए इकट्ठी होती है तो स्त्रियां शिक्षा अथवा प्रचार न करें। [12]''आमीन'' की सरल परिभाषा है ''ऐसा ही हो।'' यह केवल ''प्रार्थना समाप्त करने के लिए'' ही एक शब्द नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि आप प्रचारक की किसी बात पर सहमत हैं, तो आप ''आमीन'' कह कर इसे जता सकते हैं। [13]यह सामान्यत: धन का चन्दा है, परन्तु यह अन्य सामग्रियों का योगदान भी हो सकता है। [14]''अपनी आमदनी के अनुसार'' अर्थात जो कुछ उसने कमाया है। शब्द के आज के उपयोग के बिना भी आपको बाइबल के अनुसार ''आमदनी'' हो सकती है। [15]पहली बार पढ़ने पर, ऐसे लग सकता है कि हर एक मसीही को गुप्त रूप से अपना धन अलग कर के रखना हो। परन्तु, यह उसी बात को आवश्यक कर देगा जिससे बचने की पौलुस कोशिश कर रहा था: उसके आने पर चन्दा करना। यह ''चन्दा'' था जिसे कलीसिया ने इकट्ठा करना था (आयत 1) ताकि जब पौलुस आए तब ''चन्दा'' करने की आवश्यकता न हो (आयत 2)। इसलिए ''अपने पास रख'' छोड़ने का प्रयास साझे कोष (कई बार इसे ''कलीसिया का भण्डार'' कहा जाता है) में धन को रखने के लिए कलीसिया की सार्वजनिक गतिविधि होती होगी। [16]कई लोगों का विचार है कि, इब्रानियों की पुस्तक के मूल पाठकों के लिए यह ''दिन'' यरूशलेम में विनाश का दिन था। [17]मुझे छोटे बच्चों की माताओं के लिए यह विशेष टिप्पणी जोड़नी पड़ेगी: जब आपके बच्चे छोटे होते हैं तो आराधना करना कठिन होता है, परन्तु आपको विश्वास के साथ उपस्थित होना बन्द नहीं करना चाहिए। आराधना सभा के दौरान जितना भी आप कर सकती हैं, अपनी पूरी कोशिश से कीजिए। परमेश्वर समझ जाएगा, और आप अपने बच्चों को ''प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए'' (इफिसियों 6:4) उनका पालन-पोषण कर रही होंगी।